

मोट स्त्री. (देश.) 1. मोटरी, गठरी पुं. चमड़े का एक प्रकार का बड़ा थैला जिससे खेत की सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकाला जाता है, चरसा।

मोटक पुं. (तत्.) ऊपर गाँठ युक्त दो तीन कुशों का समूह जो पितृश्राद्ध में उपयोग किया जाता है।

मोटकी स्त्री. (तद्.) संगीत में एक प्रकार की विशेष रागिनी।

मोटन पुं. (तत्.) 1. किसी चीज को मोड़ने या मलने का भाव, अवस्था 2. वायु, हवा।

मोटनक पुं. (तत्.) (छंद) एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, दो जगण लघु और गुरु होते हैं तथा इनके योग से कुल ग्यारह वर्ण होते हैं।

मोटर स्त्री. (अं.) 1. गति उत्पन्न करने वाला कोई यंत्र, इंजन या मशीन 2. पेट्रोल, डीजल, सी.एन.जी. आदि से सड़क पर चलने वाली एक प्रकार की सवारी गाड़ी।

मोटरी स्त्री. (देश.) गठरी।

मोटा वि. (तद्.) 1. अधिक मांस चरबी युक्त स्थूल काय 2. जो बारीक न हो जैसे- मोटा आटा 3. बड़ा जैसे- इनका मोटा काम है 4. जो वस्तु अधिक गोलाई लिये हो।

मोटाई स्त्री. (देश.) 1. मोटे होने की अवस्था या भाव 2. किसी वस्तु की लंबाई चौड़ाई से भिन्न भाग की नाप जैसे- इस संगमरमर पत्थर की मोटाई दो इंच है 3. धन-वैभव आदि की अधिकता के कारण अहंकारवश स्वैच्छिक व्यवहार का प्रदर्शन अथवा आलस्य व अकर्मण्यता के भाव का प्रदर्शन जैसे- इसे मोटाई छापी हुई है।

मोटाना अ.क्रि. (देश.) 1. मोटा हो जाना, स्थूल काय होना 2. धन सम्पन्न होना 3. धन-व्यवसाय आदि का बढ़ना जैसे- मोटा धंधा।

मोटापन पुं. (देश.) मोटा होने की अवस्था या भाव दे. मोटाई।

मोटापा पुं. (देश.) मोटा होने की अवस्था या भाव, मोटापन।

मोटा-मोटी क्रि.वि. (देश.) 1. विचार की दृष्टि से स्थूल रूप में जैसे- मोटे हिसाब से 2. स्थूल गणना के विचार से जैसे- मोटा-मोटी उस गाँव में 100 शिक्षक तो हैं ही।

मोटिया पुं. (देश.) मोटा और खुरदरा वस्त्र जैसे- खद्दर, गजी।

मोट्टायित पुं. (तत्.) काव्य. जब नायिका प्रिय की चर्चा के प्रसंग में अपने अनुराग को छिपाने के लिए सचेष्ट होती है किंतु उसके हाव भाव व व्यापार उसके अन्तर्मन के अनुराग को व्यक्त कर देते हैं।

मोठ स्त्री. (तद्.) मूँग की तरह का एक मोटा अन्न, बनमूँग, मुगानी, मोथी।

मोठस वि. (देश.) मौन, चुप।

मोड़ पुं. (देश.) 1. मुड़ने या मोड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव, घुमाव 2. किसी वस्तु या चीज में होने वाला घुमाव, वलन 3. मार्ग का वह स्थान जहाँ से वह किसी अन्य ओर मुड़ता है 4. जहाँ विचार या अभिव्यक्ति की दिशा कुछ बदलकर किसी दूसरी तरफ हुई हो जैसे- कर्मयोग पर विचार करते हुए भक्तियोग का नया मोड़ आरंभ होता है।

मोड़-तोड़ पुं. (देश.) 1. मोड़ने तोड़ने आदि की क्रिया या भाव 2. घुमाव 3. घुमाव-फिराव या चालाकी से भरी बातें।

मोड़ना स.क्रि. (तत्.) 1. किसी वस्तु को किसी एक दिशा में मोड़ने की क्रिया 2. घुमाना जैसे- वाहन को विपरीत दिशा में मोड़ना 2. किसी बात या चीज आदि को अन्य ओर प्रवृत्त करना जैसे- 1. बात को मोड़ना 2. मुँह मोड़ना।

मोड़-मुड़क स्त्री. (देश.) चित्रकला या कलात्मक वस्तुओं में बनी अंगों आदि की वह स्थिति जिससे चित्र एकदम सजीव लगता हो।